# विशिष्ट अतिथि उद्‌बोधन

## द्वितीय दीक्षान्त समारोह

सोमवार, 18 जनवरी, 2021

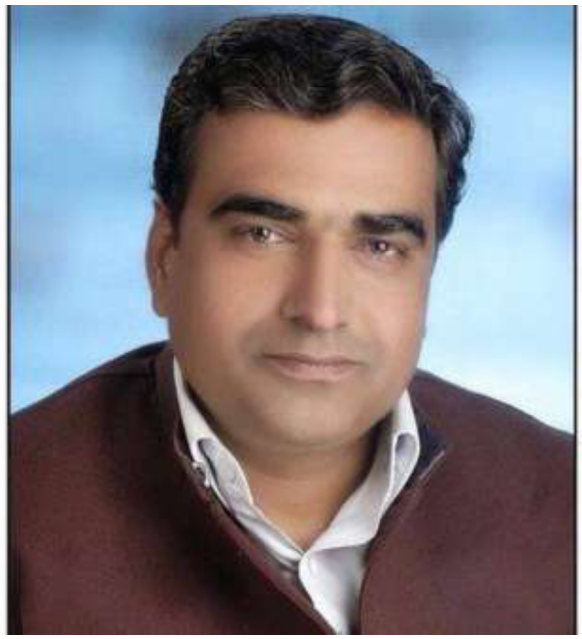

## श्री लालचन्द जी कटारिया

माननीय कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य मंत्री
राजस्थान सरकार

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

# द्वितीय दीक्षान्त समारोह
## दिनांक : 18 जनवरी, 2021

# उद्‌बोधन

श्री लालचन्द जी कटारिया
माननीय कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य मंत्री
राजस्थान सरकार

## कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

- राजस्थान के माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज जी मिश्र साहब।
- दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि एवं राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्रीमान् अशोक जी गहलोत साहब।
- दीक्षान्त अतिथि डॉ. त्रिलोचन महापात्र जी, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् तथा सचिव, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग, नई दिल्ली।
- डॉ. बी. आर. चौधरी जी, कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर।
- दीक्षान्त समारोह से जुड़े सभी कुलपतिगण, विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल व शैक्षणिक परिषद् के माननीय सदस्य।
- अधिष्ठाता एवं निदेशकगण, कुलसचिव, शिक्षक एवं कर्मचारीगण, आमंत्रित अतिथि व विद्यार्थीगण तथा
- अन्य समस्त महानुभावों, प्रेस व मीडिया के बन्धुओं, भाइयों एवं बहनों।

सबसे पहले मैं माननीय राज्यपाल महोदय एवं राजस्थान के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत साहब का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

मैं कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के द्वितीय दीक्षान्त समारोह में आज सभी उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों व छात्राओं को भी बधाई देता हूँ। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यहाँ से शिक्षा प्राप्त छात्र–छात्राएँ देश के किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लक्ष्य में कार्यरत हैं। गत वर्ष विश्वविद्यालय के 28 विधार्थियों का आई.सी.ए.आर. की जे.आर.एफ., एस. आर.एफ. तथा अन्य कृषि विश्वविद्यालयों में मेरिट के आधार पर प्रवेश पाना गौरव का विषय है। मैं उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों से आशा करता हूँ कि वे कृषक समुदाय की सेवा कर राष्ट्र के कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

आज भी देश की लगभग आधी से अधिक आबादी का जीवनयापन प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। कृषि क्षेत्र अन्य क्षेत्रों से व्यापक तौर पर भिन्न है जो कि ग्रामीण परिवेश, भूमि, जल, जंगल, पशु आदि की प्रतिकूल परिस्थितियों में कार्य करके भी देश के लिए खाद्यान्न

उत्पादित करता है। देश के कुल सकल घरेलू उत्पादन में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि अन्य उद्योगों के लिए भी विकास का आधारभूत ढांचा है। हाल ही में कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान देश के सभी क्षेत्रों में गिरावट देखने को मिली लेकिन कृषि ही एक मात्र ऐसा क्षेत्र रहा है जिसने देश की जी.डी.पी. को मजबूती प्रदान की है।

आज हमारी प्राथमिकता प्रति हेक्टेयर उत्पादन की अपेक्षा प्रति हेक्टेयर आय पर केन्द्रित हो गई है। अतः हमारी कृषि व्यवस्था में एक व्यापक बदलाव की आवश्यकता महसूस की जा रही है। विश्व में वैज्ञानिक स्तर पर नई किस्मों के विकास, पानी बचत, नाइट्रोजन दक्षता, कार्बन स्थिरीकरण, जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीली कृषि, जैव तकनीकी, ऊर्जा, जैविक तथा पर्यावरणीय कृषि, दूरस्थ सूचना आधारित कृषि प्रबन्धन, वर्टिकल फार्मिंग, मार्केट इन्टेलीजेन्स आदि के क्षेत्रों में हो रहे विकास को कृषि शिक्षा, अनुसंधान एवं कृषि प्रसार में ज्यादा से ज्यादा समावेश कर हमारे युवाओं को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अधिक दक्ष एवं सक्षम बनाने की आवश्यकता है।

हमें यह समझना होगा कि जब तक छोटी जोत के किसान कृषि प्रणाली में विभिन्न प्रकार की कृषि, जिसमें द्वितीयक और विशेषज्ञतापूर्ण कृषि भी शामिल है, को नहीं अपनाते हैं, तब तक उनकी आमदनी को दोगुनी करना संभव नही होगा। राजस्थान ने सरसों, ग्वार, संतरा, किन्नों, बेर, जैतून, अमरूद, सीताफल, बीजीय मसाला फसलें (जीरा, धनिया, सौफ, मैथी), औषधीय फसलें (ईसबगोल, अश्वगन्धा, तुलसी, ग्वारपाठा आदि), दूध उत्पादन, मशरूम उत्पादन, मछली उत्पादन के क्षेत्रों में आशानुरूप प्रगति की है। राजस्थान में पिछले दो दशकों की समयावधि में खाद्यान्नों की तुलना में इन सभी क्षेत्रों में अधिक तीव्र वृद्धि (लगभग 5.0–7.0 प्रतिशत) देखी गई है। इसके अलावा कृषि वानिकी, मूल्यसंवर्धन संरक्षित खेती, खुम्बी उत्पादन, मधुमक्खी पालन, रेशम पालन, मसाले, औषधीय पौधों, सब्जियों के संकर बीजोत्पादन, रोगमुक्त कलमें उपलब्ध कराकर नर्सरी तैयार करने, मछली बीज उत्पादन, फूलों की खेती, परिनगरीय कृषि को बढ़ावा देने के लिए सब्जियों की पौध तैयार करने, प्लास्टिक कल्चर के उपयोग, सस्योत्तर प्रबन्धन, ग्रामीण स्तरीय कम लागत का मूल्यवर्धन, आदि को अपनाकर किसानों की आमदनी में वृद्धि करने की भी प्रबल संभावनाएँ उपलब्ध है।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा किसानों के लिये खेती में परम्परागत फसलों जैस तिल, बाजरा, मूंग, मौठ, इत्यादि की उन्नत किस्में विकसित की गई है जिनसे गणवत्तायुक्त बीज उत्पादन किया जा रहा है साथ ही किसानो को नये विकल्प उपलब्ध कराने तथा उनकी आय बढाने के उद्देश्य से नवीन फसलों जैसे चिया, चिकोरी (कॉफी), किनोवा एवं केमोमाईल (चाय) पर भी अनुसंधान शुरू किया है, जो एक सराहनीय कदम है।

हम जानते हैं कि पश्चिमी राजस्थान में जल उपलब्धता की विषम परिस्थितियॉ हैं। इसे दृष्टिगत रखते हुए वर्षा जल संरक्षण की दि" ाा में कृषि वि" वविद्यालय, जोधपुर द्वारा करीब 80 लाख लीटर क्षमता के वर्षा जल संग्रहण प्रणाली तथा सौर उर्जा जैसे प्राकृतिक संसाधनों के सदुपयोग हेतु 470 किलोवाट क्षमता का संयत्र भी स्थापित किया गया है। मै वि" वविद्यालय के इन प्रयासों की सराहना करते हुए वैज्ञानिकों से जल संरक्षण एवं कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली फसलों पर भी अनुसंधान कर किसानों को नवीन तकनीकी के माध्यम से जोड़ने तथा उनकी आय बढाने का आह्वान करता हूॅ।

राजस्थान राज्य की कृषि के समग्र विकास व कृषकों के आर्थिक सशक्तिकरण व बेहतर ग्रामीण जीवन हेतु राज्य सरकार नई कृषि व पशुपालन नीति के मसौदे को अन्तिम रूप देने में तत्पर है। हमने विशेषज्ञों के परामर्श अनुसार इन नीतियों के माध्यम से कृषक समाज के समग्र विकास का भागीरथ प्रयास किया है। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि इन नीतियों के त्वरित क्रियान्वयन में अपना योगदान दें।

मैं आज दीक्षांत समारोह के पुनीत अवसर पर उपाधि प्राप्त करने वाले विद्याथियों को पुनः अपनी ओर से बधाई देता हूॅ तथा कामना करता हूॅ कि आपका भविष्य उज्ज्वल हो तथा आप राष्ट्र निर्माण में अपनी सक्रिय भागीदारी निभायें।

मैं इस अवसर पर माननीय राज्यपाल, राजस्थान एवं कुलाधिपति आदरणीय श्री कलराज जी मिश्र साहब, राजस्थान के यशस्वी व लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोक जी गहलोत साहब, आई.सी.ए. आर. के महानिदेशक डॉ. महापात्र जी तथा विश्वविद्यालय परिवार का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित करता हूॅ। एक बार पुनः सभी विद्यार्थियों को बधाई।

।। जय हिन्द जय किसान ।।